International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp.149-154

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

अवनीश कुमार सिंह*

प्रस्तावना

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के पहले हमें अपनी शिक्षा के उद्देश्यों पर गंभीरता से विचार करना होगा। हमारी शिक्षा के उद्देश्य क्या है? क्या इन उद्देश्यों के अनुरूप हमारी कक्षा–शिक्षण अधिगम प्रक्रिया हो रही है? जब भी हम शिक्षा के उद्देश्य की बात करते हैं तो एक सार्वभौमिक उद्देश्य हमारे सामने होता है, बच्चे का सर्वांगीण विकास करना। सर्वांगीण विकास यानपे बच्चे का मानसिक, शारीरि, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास। इन उद्देश्यों के आधार पर यदि हम अपने आस–पास के विद्यालयों का अवलोकन करें तो पाते हैं की ऊपर जिस विकास की बातें हम कर रहे हैं उस पर और कार्य करने की आवश्यकता है। बच्चों के मानसिक विकास के लिए कक्षा में सीखने–सिखाने के नाम पर जो क्रियाकलाप कराये जाते हैं, उनका संबंध किताबों के इर्द–गिर्द होता है जो पूरी तरह रटने पर आधारित है यानि हमारे शिक्षा के उद्देश्य परीक्षा पास करने के उद्देश्यों में बदल जाते हैं और इस पूरी प्रणाली में न सिर्फ बच्चे, शिक्षक और पालक बल्कि पूरा समुदाय शामिल होता है।

NCF-2005, कोठारी आयोग राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, RTE-2009 ने समय–समय पर शिक्षा की नीतियों में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रक्रिया को लेकर चिंताएँ व्यक्त की जाती रही है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में इस बात का उल्लेख किया गया है कि मूल्यांकन एक व्यापक एवं सतत् प्रक्रिया है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का आशय (CCE Means)

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों के विकास के समस्त क्षेत्रों का सतत् एवं नियमित आकलन है। जिसमें विभिन्न विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से बच्चों का आकलन किया जाता है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में तीन शब्द हैं सतत्, व्यापक एवं मूल्यांकन।

सतत् (Continuous)

सतत् का शाब्दिक आशय ''लगातार'' है! सतत् के साथ आकलन शब्द जुड़ा है अर्थात लगातार आकलन करना। सतत् आकलन एवं कक्षा शिक्षण प्रक्रिया साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया है। इसे हम पृथक–पृथक रूप में नहीं देख सकते। यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का समेकित भाग है। इसमें बच्चे मूल्यांकन का मतलब बच्चों को उसकी सफलता या असफलता का प्रमाण–पत्र देना ही नहीं, बल्कि उसकी योग्यता को बढ़ावा देते हुए सही दिशा प्रदान करना है।

व्यापक (Comprehensive)

व्यापकता से आशय बच्चे के समस्त कौशलों/गुणों के विकास से है जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास भी सम्मिलित है जो एक अच्छे नागरिक के लिए आवश्यक होता है। इन गुणों को हम दो भागों में बाँट सकते है। संज्ञानात्मक एवं सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र। पूर्व में कक्षा उन्नति का आधार केवल पाठ्यपुस्तक केन्द्रित होता रहा है, जो संज्ञानात्मक क्षेत्र तक सीमित रहा। वर्तमान में इसमें बच्चों

* शोधार्थी, लार्डस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

के सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र जैसे–बच्चों की रूचि, अभिवृत्ति सृजनशीलता, खेलकूद, योग आदि को सम्मिलित किया गया है। इन गुणों का विकास धीमी गति से होता है तथा वांछित परिवर्तन लाने के लिए प्र्याप्त समय की आवश्यकता होती है। व्यापक आकलन, अवलोकन, चर्चा, साक्षात्कार आदि के माध्यम से किया जा सकता है।

मूल्यांकन (Evaluation)

मूल्यांकन, कक्षा अधिगम प्रक्रिया के साथ–साथ बच्चों के सीखने क गति, अवधारणा, ज्ञान, अभिवृत्ति, कौशल, व्यवहार, अनुभव आदि को जानने के लिए योजनाबद्ध रूप से साक्ष्यों का संकलन, विश्लेषण, व्याख्या एवं सुझाव देने की प्रक्रिया है। साक्ष्यों का यह संकलन कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के समय शिक्षकों द्वारा उपयोग में लाए गए उपकरणों के माध्यम से किया जाता है क्योंकि मूल्यांकन के आधार पर आवश्यक सुधार कर उपलब्धि स्तर को बढ़ाया जा सकता है। मूल्यांकन प्रक्रिया जितनी बेहतर होगी विकास की गति उतनी ही बेहतर होगी।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का आशय यह नहीं है (CCE doesn't mean)

- यह परीक्षा का पर्याय नहीं है और न ही बच्चों का नियमित परीक्षण है।
- बच्चों को ग्रेड या अंक देना, फेल–पास का सटिर्फिकेट देना।
- बच्चों को नाम देना जैसे धीमी गति से सीखने वाला, कमज़ोर, होशियार, समस्या मूलक विद्यार्थी आदि।
- बच्चे की प्रगति की तुलना अन्य बच्चे से करना।

आकलन व मूल्यांकन में अंतर (Difference between Assessment and Evalvation)

- **आकलन –** आकलन, मूल्यांकन करने की एक प्रक्रिया है जो निरंतर चलती है इसे छोटे–छोटे उद्देश्यों के लिए किया जाता है। आंकलन से निरंतर सुधार (उपचारात्मक शिक्षण) किया जाता है।
- **मूल्यांकन –** विशिष्ट उद्देश्यों के लिए आकलन के आधार पर लिया गया निर्णय मूल्यांकन है। मूल्यांकन द्वारा शिक्षकों, पालकों एवं बच्चों को फीडबैक प्राप्त होता है। यह कक्षा उन्नति का भी आधार होता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य

- विभिन्न विषयों में निश्चित समय उपरांत बच्चों की प्रगति जानना।
- बच्चों के व्यवहार में हुए परिवर्तनों का पता लगाना।
- बच्चे की व्यक्तिगत और विशेष जरूरतों का पता लगाना।
- अधिक उपयुक्त तरीकों के आधार पर अध्यापन और सीखने की स्थितियों की योजना बनाना।
- कोई बच्चा क्या कर सकता है और क्या नहीं, उसकी किन चीजों में विशेष रूचि है, वह क्या करना चाहता है और क्या नहीं, इन सबके प्रति समझ बनाना और बच्चे की मदद करना।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के सिद्धान्त (Principles of CCE)

- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन तथा सीखने की प्रक्रिया साथ–साथ चलता है, जिसमें बच्चे को सीखने के प्र्याप्त अवसर उपलब्ध कराने के बाद ही मूल्यांकन किया जाता है।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में बच्चे की प्रगति की तुलना उसके स्वयं की पिछली प्रगति से की जाती है न कि अन्य बच्चों की प्रगति से।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में बच्चे की प्रगति की तुलना उसके स्वयं की पिछली प्रगति से की जाती है न कि अन्य बच्चों की प्रगति से।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में बच्चे के सीखने की गति एवं क्षमता के अनुसार अलग–अलग गतिविधियों का उपयोग किया जाता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के क्षेत्र

- संज्ञानात्मक क्षेत्र
- सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र

संज्ञानात्मक क्षेत्र (Scholastic Area)

संज्ञानात्मक क्षेत्र के अंतर्गत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर पढ़ाए जाने वाले समस्त विषयों का मूल्यांकन किया जाता है, जो बच्चों के मानसिक विकास में मदद करते हैं। पढ़ायें जाने वाले विषयों का आकलन विभिन्न उपकरणों के माध्यम से किया जाता है। जैसे– लिखित, मौखिक, प्रोजेक्अ, प्रदत्त कार्य आदि! इसका उद्देश्य बच्चों के सीखने की गति, क्षमता एवं कठिनाइयों का पता लगाकर आवश्यकतानुसार बच्चे को सीखने के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध कराना है। संज्ञानात्मक क्षेत्र का आकलन दो प्रकार से किया जाता है– फॉरमेटिव आकलन व समेटिव आकलन

सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र (Co-Scholastic Area)

इस क्षेत्र के अंतर्गत सहशैक्षिक क्रियाकलाप अर्थात् खेलकूद, योग, साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, कार्यानुभव, सहयोग, अनुशासन, अभिवृत्ति आदि क्षेत्रों को शामिल किया जाता है। जिसके माध्यम से बच्चों के मानसिक पक्ष के साथ–साथ उनके भावनात्मक व मनोगत्यात्मक पक्ष जैसे– सृजनात्मक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक आदि के विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है।

संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन (Evaluation of Scholastic Area)

- **रचनात्मक आकलन** (Formative Assessment)

रचनात्मक आकलन, कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, जो सतत् रूप से औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में किया जाता है। कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को सीखने–सिखाने के पर्याप्त अवसर दिए जाते हैं जिससे बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण कर सकें। बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं गतिविधियों के माध्यम से, अपने अनुभव एवं गलतियों के निरंतर सुधार से करते हैं। सीखने सिखाने की इस प्रक्रिया में शिक्षक को यह जानना बहुत आवश्कय है कि बच्चे कितना सीख रहे हैं, सीखने की प्रगति कैसी है, बच्चे को कहाँ मदद की आवश्यकता है? अतः शिक्षक कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान विभिन्न उपकरणों के माध्यम से बच्चे का सतत् आकलनप करता है, आकलन के दौरान शिक्षक न सिर्फ आवश्यकतानुसार बच्चे का उपचारात्मक शिक्षण करता है बल्कि अपने स्वयं की भी शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करता है।

शिक्षक अपने स्वयं के फीडबेक हेतु, माता–पिता फीडबेक देने एवं बच्चों की प्रगति जानने के लिए फारमेटिव आकलन के कुछ बिंदुओं को मूल्यांकन पंजी में नोट करता है जिसके वेटेज को प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में सम्मिलित किया जाता है। यह वेटेज प्राथमिक स्तर पर 50 प्रतिशत एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर 40 प्रतिशत है। यह वेटेज एक निश्चित अवधि पश्चात कम–से–कम पाँच उपकरणों के माध्यम से निकाला जाता है, जिसमें बच्चे ने अच्छा प्रयास किया।

- **योगात्मक आकलन** (Summative Assessment)

योगात्मक आकलन प्रत्येक सेमेस्टर के अंत में किया जाता है। यह आकलन पेपर पेंसिल (लिखित) उपकरण की सहायता से निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर किया जाता है। जिसके लिए प्रश्न पत्र का उपयोग किया जाता है। शिक्षक प्रश्न बनाते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि प्रश्न–पत्र कौशल आधारित हो, रटने पर न हो, तथा बच्चों के अनुभव, कल्पना–शक्ति, सृजनशीलता, तर्क करने, स्वतंत्र विचारों को रखने के लिए अवसर प्रदान करता हो। प्रश्न बनाते समय प्रश्नों के शैक्षिक उद्देश्यों को भी ध्यान में रखा जाए अर्थात् प्रश्न ज्ञान, अवबोध, कौशल एवं अनुप्रयोग पर आधारित हो जिसमें वस्तुनिष्ठ, अतिलघुत्तरीय, लघुत्तरीय, दीर्घउत्तरीय प्रकार के प्रश्न शामिल हो (कक्षावार संदर्शिका में देखें)। योगात्मक आकलन में D एवं E ग्रेड प्राप्त बच्चों का

उपचारात्मक शिक्षण का प्रावधान होता है। उपचारात्मक शिक्षण के लिए प्रथम सेमेस्टर के पश्चात् 15 दिन का समय होगा तथा द्वितीय सेमेटर में स्कूल पर (जून माह) होगा। उपचारात्मक शिक्षण पश्चात् ही बच्चे को कक्षान्नोति दी जाएगी।

सतत् आकलन के दौरान बच्चों ने कितना सीखा यह जानने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है। उपकरण का तात्पर्य उन गतिविधि से है जिसका उपयोग लिखित कौशलों के आकलन के लिए करते है जैसे–मौखिक कार्य, लिखित कार्य, प्रोजेक्ट आदि। इनकी सहायता ले यह पता कर सकते हैं कि बच्चा सीख रहा है या नहीं सीखने की गति क्या है, आदि नहीं सीख पा रहा है, तो कौन–कौन से कारण है। चूँकि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है। अतः शिक्षक कक्षानुसार उपकरणों का उपयोग होगा। आपकी सहायता के लिए कुछ उपकरणों पर चर्चा हम आगे कर रहे है।

उपकरण

- **मौखिक**

यह एक बहुत ही सरल पर अधिक प्रभावशाली उपकरण है। इस उपकरण के माध्यम से बच्चे की अभिव्यक्ति क्षमता, विषय की समझ तथा भाषायी कौशल जैसे– उच्चारण, लिंग एवं वचन के अनुसार वाक्य संरचना, गद्य एवं पद्य का वाचन, मौलिक विचार आदि का मूल्यांकन किया जा सकता है। मौखिक मूल्यांकन सभी विषयों में किया जा सकता है। गणित में सूत्र, पहाड़े, गिनती आदि मौखिक पूछे जा सकते हैं। मौखिक आकलन प्रश्न पूछकर, चर्चा किया जा सकता है।

मौखिक मूल्यांकन के संकेतक

- विषयानुरूप
- मौलिकता
- सहभागिता
- आत्मविश्वास

अवलोकन (Observation)

अवलोकन के द्वारा बच्चों के विषय ज्ञान एवं व्यावहारिक ज्ञान का मूल्यांकन किया जाता है। अवलोकन द्वारा मूल्यांकन एक दिन में नहीं किया जा सकता। अवलोकन हेतु साक्ष्यों की आवश्यकता होती है, जैसे–पोर्टफोलियो, कक्षा कार्य, गृह कार्य, प्रदत्त कार्य, प्रोजेक्ट कार्य आदि। सहपाठी–शिक्षक से प्राप्त टीप तथा बच्चों से बातचीत कर उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन एवं दक्षताओं को देखकर भी मूल्यांकन किया जा सकता है।

सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र के मूल्यांकन में अवलोकन का महत्वपूर्ण स्थान है। अवलोकन व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है। अवलोकन भिन्न–भिन्न गतिविधियों और परिवेश में किया जाना चाहिए। शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि अवलोकन से प्राप्त बिंदुओं को शिक्षक अपनी डायरी में लिखें एवं बच्चे के क्रमिक विकास को देखें।

पोर्टफोलियो (Portfolio)

पोर्टफोलियो बच्चे समग्र व्यक्तित्व का आकलन है। पोर्टफोलियो एक फाइल होती है जिसका निर्माण बच्चे स्वयं कर सकते हैं। इस पोर्टफोलियो के सामने पृष्ठ में बच्चों की सामान्य जानकारी लिखने के साथ–साथ बच्चे अपने रूचि अनुसार से सजाते हैं। प्रत्येक बच्चा अपने पोर्टफोलियो को आकर्षक ढंग से सजा भी सकता है। इसे बच्चे अपने पास या कक्षा में जगह होने पर रख सकते हैं। इसमें बच्चों द्वारा किए गए उन कार्यों का संग्रह होता है जिसे कक्षा शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कराया जाता है, जैसे– बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र, लिखी गई कहानी, कविता या स्वयं का अनुभव, किसी घटना का वर्णन, कोई अच्दी बात, स्वमूल्यांकन–प्रपत्र

आदि। पोर्टफोलिया में खास–खास चीज़ों को ही रखा जाए अन्यथा संधारण करने एवं अवलोकन करने में कठिनाई होगी। इस पोर्टफोलियो को देख सकते है। बच्चे भी अपने पोर्टफोलियों को देखकर पूर्व में एवं वर्तमान में किए गए कार्यों की तुलना कर स्वमूल्यांकन कर सकते हैं।

पोर्टफोलियों में रखी जाने वाली सामग्री

- बच्चों को प्राप्त प्रमाण–पत्र, प्रशस्ति पत्र।
- बच्चे द्वारा बनाई गई सृजनात्मक कलाकृतियाँ, ड्राइंग, पेंटिंग, कागज़ की सामग्री आदि।
- बच्चों द्वारा लिखी गई कविताएँ, कहानियाँ, लेख, निबंध, अनुभव आदि।
- कुछ अतिरिक्त जो बच्चे रखना चाहें।

प्रदत्त कार्य (Assignment)

प्रदत्त कार्य का मुख्य उद्देश्य पाठ्य–पुस्तकों में निहित अवधारणाओं संबंध में और अधिक जानकारी एकत्रित करना है। जिससे बच्चों के ज्ञान में वृद्धि हो सके। ये जानकारियाँ स्थानीय परिवेश, समाचार–पत्र या चर्चा कर एकत्रित किए जा सकते हैं। बच्चे अपने किए गए कार्यों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इसमें उनकी सृजनशीलता, कल्पनाशीलता विकसित होती है। प्रदत्त कार्य ऐसे हो जिसे बच्चे को कार्य करने में आनंद आए, कुछ अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त हो। जिसमें सूचनाओं की खोज करने विचारों का सृजन करने विद्यालय के भीतर और बाहर होने वाले अधिगम को जोड़ने का अवसर मिले जैसेः–

- अपने आस–पास पाए जाने वाले औषधीय पौधों के बारे में पता करके उनके नाम लिखो और पता करो कि वे किस बीमारी में काम आते हैं।
- पिछले पाँच दिनों के दैनिक अख़बार का अवलोकन करो और उन सूचनाओ को लिखो जो आपके अनुसार पर्यावरण से संबंधित है।
- आपके घर में पाए जाने वाली विभिन्न आकार की पाँच–पाँच वस्तुओं की सूची बनाइए।
- किन्हीं भी दस शब्दों/वाक्यों को अपने मित्र या पड़ोसी की भाषा में (कम से कम पाँच भाषाओं) अनुवाद करो।

मूल्यांकन के संकेतक (Indicators)

- विषय की समझ योजना बनाना
- किए गए कार्य का परिवेश के साथ अंतर्संबंध
- कार्य की पूर्णता
- प्रस्तुतीकरण का तरीका

निष्कर्ष

- **सर्वे**

सर्वे के माध्यम से हम आकड़ों को प्राप्त करते हैं जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार की योजनाओं के लिए तथा समस्या सुलझाने के लिए किया जाता है। सर्वे के माध्यम से बच्चों में वर्गीकरण, तुलना, सारणी बनाने, समूह में कार्य करने लोगों से बातचीत करने, निष्कर्ष निकालने आदि कौशलों का विकास होता है। सर्वे का कार्य बच्चे अकेले या समूह में कर सकते हैं।

उदाहरण

कोई भी पाँच मित्रों के परिवारों के सदस्यों के शिक्षा के सतर का सर्वे करो तथा पता करो कि उनके परिवार में कितने लोग कम पढ़े–लिखे हैं कितने लोग आरहवीं पास है तथा कितने लोगों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है।

आपके पड़ोस में रहने वाले पाँच परिवारों का सर्वे कर पता करो कि उनके यहाँ यातायात के कौन–कौन से साधन हैं? तथा उसका पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है।

कक्षा के किन्हीं पाँच विद्यार्थियों से बातचीत कर पता करो कि उनके दादाजी के कितने बच्चे हैं एवं पिताजी के कितने बच्चे हैं। लड़के–लड़कियों की संख्या अलग–अलग लिखो एवं सारणी बनाकर विश्लेषण करो कि दादाजी एवं पिताजी के परिवार के सदस्यों की संख्या में क्या अंतर आया तथा उसका सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Dr. N. K. Sharma, Academic Continuous and Comprehensive Evaluation in Science X. Laxmi Publications Pvt Limited. ISBN 978-93-80644-18-9.
2. J. B. Dixit, Comprehensive Mathematics Activities and Projects X. Laxmi Publications. pp. 4. ISBN 978-81-318-0806-1.
3. J. P. Singhal, Academic Continuous and Comprehensive Evaluation in Social Science X. Laxmi Publications Pvt Limited. ISBN 978-93-80644-19-6.
4. Poonam Banga, Solutions to Academic Continuous and Comprehensive Evaluation in Hindi X B. Laxmi Publications Pvt Limited. ISBN 978-93-80644-27-1.

❖◆❖